भारत में इस्लाम का इतिहास एक दृष्टि

सुमन लता,
हिसार।

मोहम्मद बिन कासिम ने भारत में 712 ई में सिंप पर विजय प्राप्त कर मुस्लिम उपनिवेश की नींव डाल दी थी। इसी नींव के चलते ही भारत में इस्लाम का किला खड़ा हुआ था। 712 ई0 के पश्चात ही भारत में इस्लाम एक शक्ति के रूप में उभर कर आए। यह शक्ति एक राजनीतिक शक्ति थी, जिसके चलते मुसलमान भारत में लम्बे समय तक भोगता बने रहे। ''भारत का इतिहास विभिन्न प्रकार की जातियों और संस्कृतियों के पारस्परिक परिवर्तन की प्रक्रिया द्वारा सामंजस्य और साहचर्य की स्थापना का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करता है।''[1] यह एक विशेष बात थी कि इन दिनों भारतीय समाज ने मुगलों के धर्म दर्शन को कैसे अंगीकार कर लिया। ''इसमें प्राचीन परम्परा और रिवाजें कालक्रम के अनुसार उपलब्धि के रूप में ग्रहण कर लिया।''[2] इस का परिणाम यह हुआ कि पिछले छह सौ वर्षों में आज तक पहुंचने वाले इस्लाम का स्वरूप बिलकुल बदल गया। यह अलग बात थी कि इस्लाम की मूलभूत स्वरूप बरकार रहा। समाज का इन दिनों ये दुर्भाग्य रहा, ''भाईचारे के सिद्धांत में आस्था रखने वाले होते हुए इन सदियों के दौरान इस इस्लाम का रूख एक सामंतवादी स्वरूप में बदल चुका था।''[3] और इसने सामाजिक प्रथा, कट्टर दर्शन के नियम ने हिन्दू और इस्लाम के विलय का असम्भव बना दिया।

आज भारत में इस्लाम बड़ा प्रचलित धर्म है। ''यह 2011 की जनगणना के अनुसार 14.2 प्रतिशत है।[4] बड़े आश्चर्य की बात यह है कि 7वीं शताब्दी में जन्म लेने वाला इस्लाम 8वीं शताब्दी के आरम्भ में भारत में आ गया और तब से फल–फूल रहा है। ''भारत में विवाह, विरासत और वक्फ सम्पत्ति से जुड़े मुसलमानों के व्यक्तिगत अधिकार मामले, व्यक्तिगत कानून द्वारा नियंत्रित होते हैं, सर्वोच्च न्यायालय ने यह फैसला दिया कि शरीअत या मुस्लिम कानून की भारतीय नागरिक कानून की अपेक्षा अधिक प्रधानता रहती है।''[5]

मध्ययुगीन जीवन में इस इस्लाम की उन्नति के निमित्त सामाजिक संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रोफेसर यू.एन. घोषाल ने कहा, ''वे अपनी धार्मिक आस्था, पूजा, अर्चना, ईश्वर भक्ति से सम्बन्धित दैनिक व्यवहार में वे मौलिक विभेद रखते थे। उनकी दार्शनिक मान्यताओं में उनके धार्मिक साहित्य में, स्वर्ग और नरक के लिए तथा जीवन तथा अगले जन्म सम्बन्धी विचारों में कोई साम्य नहीं था।''[6] सब लोग अपने धर्म के प्रति निष्ठावान थे और अपने सामाजिक जीवन और सद्व्यवहार में काफी अन्तर रखते थे।

लोकप्रिय विश्वास के विपरीत इतिहासकार इलियर और डाउसन की पुस्तक के अनुसार ''भारतीय तट पर 630 ई0 में मुस्लिम यात्रियों का जहाज दखा गया।''[7] इस्लाम के आगमन के साथ ही अरब वासी दुनिया में एक सांस्कृतिक शक्ति बन पूरे विश्व में धर्म (इस्लाम) के वाहक बन गए थे। यह कथित तौर पर माना जाता है कि रामवर्मा कुलशेखर के आदेश पर भारत में प्रथम मस्जिद का निर्माण 629 ई0 में किया गया ''जिन्हें मलिन बिन देगार के द्वारा केरल के कोडुगालूर में मुहम्मद (571–632) के जीवन के दौरान पहला मुसलमान शासक भी माना जाता है।[8] ''तट के आस–पास गहन मिशनरी ईसाई गतिविधि चल रही थी और भारत के मूल निवासी इस्लाम को अपना रहे थे। इन नए धर्मान्तरिक लोगों को उस समय माप्पीला समुदाय के साथ जोड़ा गया, यह इस्लाम के पौधे के रक्षा के रूप में मजबूत जाल की भूमिका में था।''[9]

8वीं शताब्दी में मुहम्मद बिन कासिम की अगुवाई में उमय्यद खलीफा भारत में पहला इस्लाम प्रचारक माना जाता है। 10वीं शताब्दी में गजनी ने यहां इस्लाम को एक प्रचलित धर्म में परिवर्तित करने के लिए खूब प्रयास किए और सफलता भी हासिल की। इस बात पर विचार करना संगत रहेगा कि

अरबीया इस्लाम के आगमन से पूर्व भी इस्लाम के पूर्व चरणों में भारत में भारतीयों के साथ सम्पर्क और व्यापार के पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं। अरब व्यापारियों ने भारतीयों द्वारा विकसित अंक प्रणाली को मध्य यूरोप में खूब प्रसारित किया। इतना ही नहीं कई अरबी लोगों ने संस्कृत की पुस्तकों को अरबी में अनुदित किया। यह समय आठवी शताब्दी का माना गया है।

कोई भी धर्म वहां की जीवन शैली का द्योतन करता है। धर्म के साथ एक शब्द दर्शन का उपयोग भी किया जाता है। दर्शन का अर्थ सामान्य रूप में देखने से लगाया जाता है जबकि विशेष अर्थ दर्शन वह है जो समाज को नई दिशा और चेतना से पूर्ण कर आने वाली सामयिक चुनौतियों का वरण कर सुखी होने की तैयारी का मार्ग निर्धारित करता है।

यह धारण करने की बात है अपनाने और उसे अपने जीवन में उतारने की बात है। ''उन गुणों का समन्वित करना जो सामाजिक व्यापकता के संकल्प को लेकर मानव विकास का अनुमोदन करता है। धर्म कहलाता है।[10] कहना संगत होगा कि कुछ लोग धर्म को सम्प्रदाय के साथ प्रयुक्त करते हैं। यह गलत है। धर्म से सम्प्रदाय बहुत दूर है। धर्म व्यापकता की संकल्पना को लेकर चलता है जबकि सम्प्रदाय मात्र सीमाएं रखता है। धर्म सर्वकालिक होता है जबकि सम्प्रदाय बिलबुला प्रकृति का होता है। धर्म को कुछ विद्वान गुण भी कहते हैं यह सही भी है। यहां गुण केवल मानवीय शब्द की ही नहीं पदार्थ शब्द की व्याख्या भी करता है। धर्म प्रकाश की कल्पना है। चेतना या अचेतना धर्म के पतन का कारण और उत्थान दोनों बनते हैं। मनु ने धर्म के दस लक्षण बताए हैंः–

''धृतिः क्षमा दमोस्तेयं शौच मिंद्रिय निग्रहः।
घीर्विद्या सत्यमक्रोधो, दशकं धर्म धर्मलक्षणम्।।[11]

वस्तुत सार रूप में यह कहा जा सकता है कि हृदय के भीतर धर्म और धर्म की सीमाएं निहित होती है। यह वह मानवीय व्यवहार होता है जिसमें व्यक्ति समाज के लिए अपने सम्पूर्ण जीवन का निर्वहन करता है।

कालांतर में एक धार्मिक जीवन शैली रिवाज में परिवर्तित हो जाती है। इन्हीं रिवाजों ने आस पास की टकराहट पैदा की और हिन्दू और इस्लाम में मिलाप नहीं हो पाया। फलतः कट्टरता और ईर्ष्या की दवाई आज तक अट नहीं पाई। ''इस्लाम धर्मावलंबिों में बराबरी और भाईचारे के सिद्धांत के अनुसार हिन्दुओं की परम्परा में बहुत भेद था।''[12] यह सब समय और सोच के अनुसार था। समाजशास्त्री कहते हैं कि समाज में मूल्य का कोई धर्म नहीं होता लेकिन मुसलमानों ने 'काफिर' शब्द के प्रयोग में मूल्य की ही परिभाषा को परिवर्तित कर दिया। यही कारण था कि शुरूआती दिनों अर्थात मुगलकाल में सात शताब्दियों तक बराबरी के कारण से दोनों धर्मों में संघर्ष चलता रहा। यहां एक ओर इस्लाम का प्रभाव था और दूसरी और व्यापक हिन्दू सभ्यता और संस्कृति का प्रभाव।

आज भारत में इंडोनेशिया और पाकिस्तान के पश्चात तीसरी बड़ी मुस्लिम आबादी हैं 2011 के जातिगत सर्वेक्षण के अनुसार कुल आबादी का 17 प्रतिशत मुसलमान भारत में निवास करता है। यह निरंतर बढ़ रहा है। 1991 में यह बढ़ोतरी 10 प्रतिशत थी। जो 2001 में 13 प्रतिशत आ गई। इसी गति से निरंतर बढ़ रही है।

समाज उस गमले का नाम जिसमें संस्कृति की बेल का पोषण होता है और संस्कृति धर्म को धारण कर आगे बढ़ती है। इसके लिए संस्कृति एक अध्यात्म के पड़ाव को पार करती है। यह अध्यात्मक के पडाव पर जब समाज पहुंचता है तो वह एकरूपता की कल्पना करता और इस कल्पना में उसका स्वयं एवं अस्तित्व खंडित हो जाता है। यहीं वह स्थिति है जहां हम अपने को भूलकर भगवान के निष्ठा का भाव अपनाते हैं। यह थोपा नहीं जाता यदि यह थोपने की प्रक्रिया होती तो मुहम्मद बिन कासिम की तलवार भारत को इस्लाम बनाने के लिए उद्यत थी परन्तु सफल नहीं हो पाया, इसके विपरीत भक्ति आंदोलन में इसकी उन्नति इसी कारण से हुई कि सूफी ओर दूसरे इस्लामिक धार्मिक संस्थाओं समाज के हृदय को अपने सद्कर्म और वाणी से प्रभावित किया। उनका दिल जीत कर उनको इस्लामिक परम्पराओं में अभेद करने का दृष्टिकोण स्थापित किया, यहीं इस्लाम की उन्नति का भारत में कारण बना। ''हिन्दू मेरी तरह विश्वस्त्र उपासक नहीं है। किन्तु वह भी उसी ईश्वर को पूजता है जिसका अराधक मैं पूजता हूं।''[13] वस्तुतः वह भी उतना ही आदरणीय है। यह अमीर खुसरो जैसे महात्मका की बात उतनी इस्लाम के प्रचार में महत्वपूर्ण सिद्ध हुई जितनी की भक्तिकालीन मुस्लिम संतों की वाणियां।

संदर्भ सूची

1 मैकमिलन, पुरी, दास, चौपड़ा, पृष्ठ–27
2 मैकमिलन, पुरी, दास, चौपड़ा, पृष्ठ–32
3 मैकमिलन, पुरी, दास, चौपड़ा, पृष्ठ–42
4 भारतीय जातिगत जनगणना रिपोर्ट अंश
5 मैकमिलन, पुरी, दास, चौपड़ा, पृष्ठ–47
6 हिस्ट्री द ग्लोटी, प्रोफेसर यू. एन. घोवाल, पृष्ठ 72
7 हिस्टोटिका, इलियट और डाउसन पृष्ठ 180
8 इंटरनेटीय ब्लाग (इस्लाम धर्म)
9 इंटरनेटीय ब्लाग (इस्लाम का विकास)
10 धर्म एवं दर्शन, आधार पब्लिकेशंज, पृष्ठ 73
11 मनुस्मृति टीका, पृष 302
12 मैकमिलन, पुरी, दास, चौपड़ा, पृष्ठ 70
13 मैकमिलन, पुरी, दास, चौपड़ा, पृष्ठ 73

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com